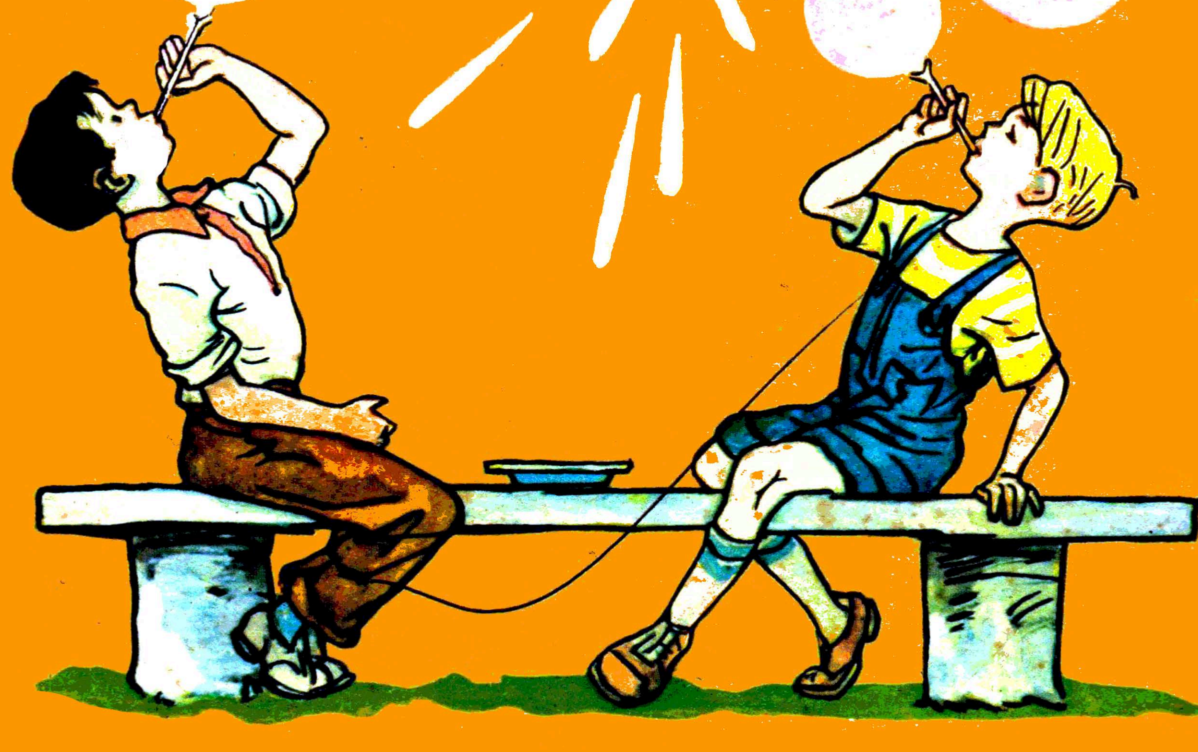
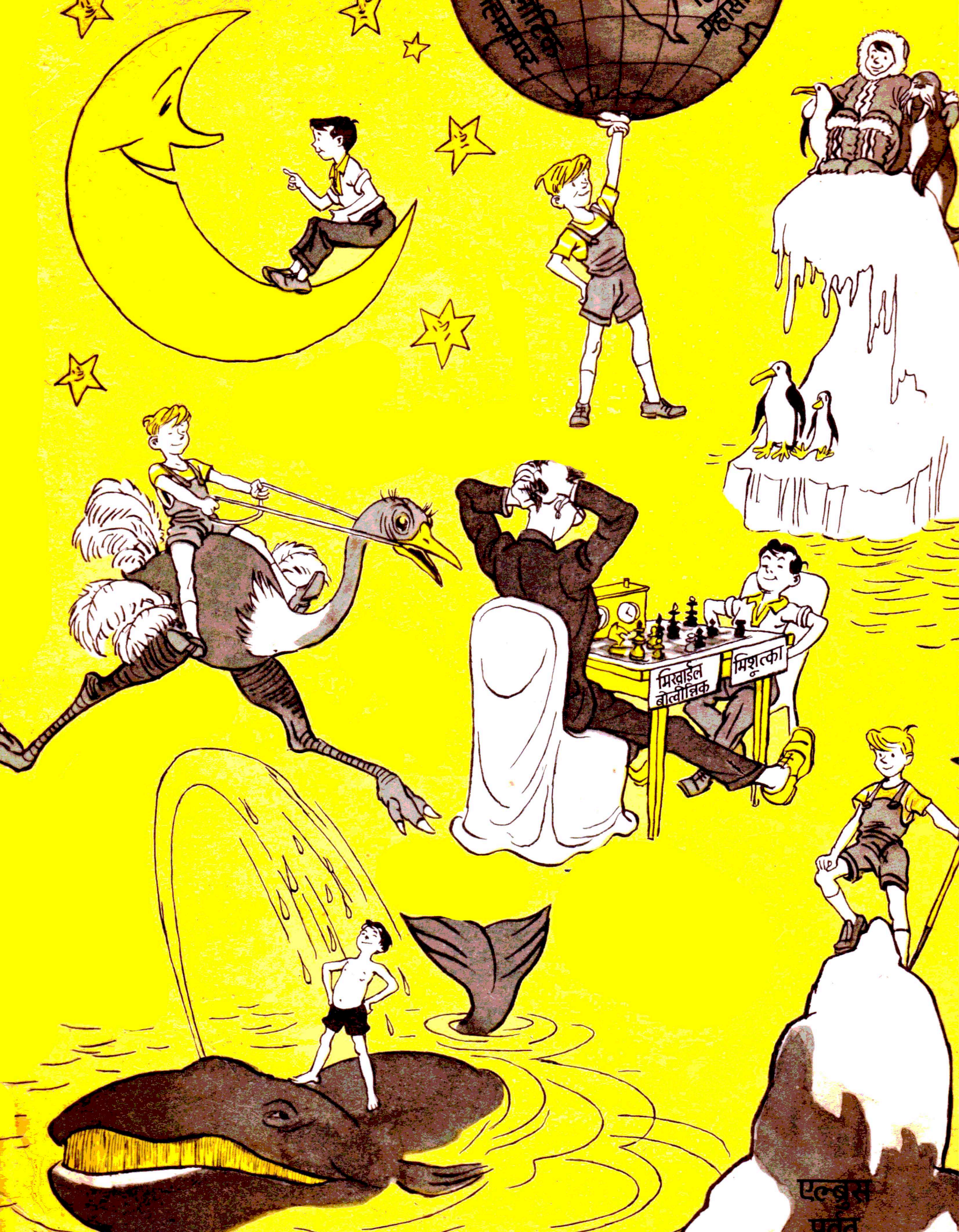
नि॰ नोसोव

दो शेख़चिल्ली

चित्रकार - इ॰ सेम्योनोव




मिखाईल बोत्वीन्निक
मिशुत्का
एल्ब्रुस



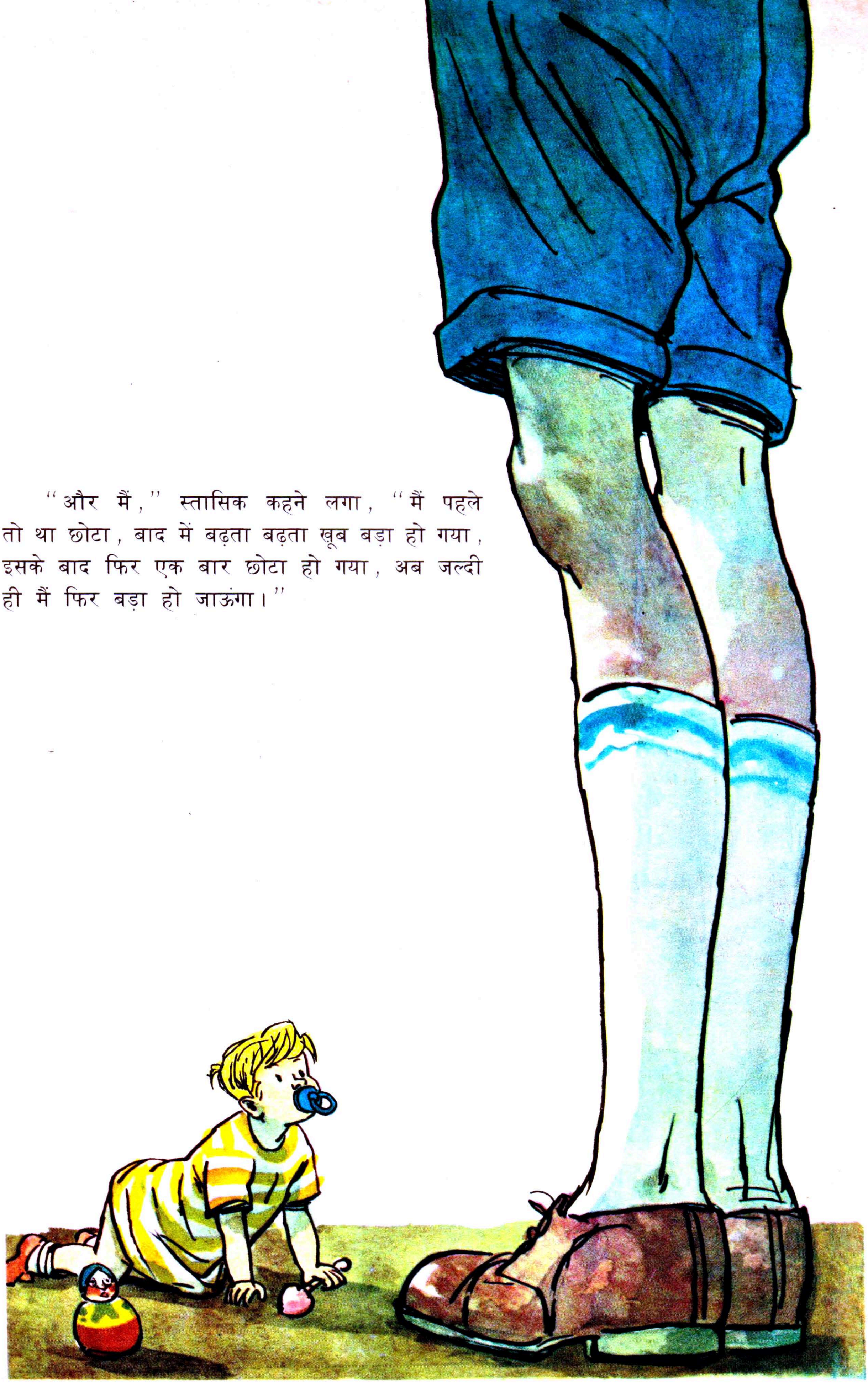
बाग़ में मिशूत्का और स्तासिक एक बेंच पर बैठे गप्पें लड़ा रहे थे। पर वे सीधी-सादी बातें नहीं कर रहे थे, जैसी और बच्चे करते हैं, वे तो भूठ-मूठ की हांक रहे थे, मानों उन में होड़ चल रही हो कि कौन सब से बड़ा भूठ बोल सकता है।

"तेरी उम्र क्या है?" मिशूत्का ने पूछा।
"पचानवे साल। और तेरी?"



"मेरी उम्र है एक सौ चालीस साल," मिशूत्का कहता है, "पहले मैं बहुत बड़ा था, जैसे चाचा बोर्या, पर बाद में छोटा होता गया।"

"और मैं," स्तासिक कहने लगा, "मैं पहले तो था छोटा, बाद में बढ़ता बढ़ता खूब बड़ा हो गया, इसके बाद फिर एक बार छोटा हो गया, अब जल्दी ही मैं फिर बड़ा हो जाऊंगा।"



"जानते हो, जब मैं बड़ा हुआ करता था, तो सारी की सारी नदी तैरकर पार कर सकता था," मिशूत्का कहता है।

"और मैं? मैं सागर पार कर सकता था!"

"सागर! मैं तो महासागर पार कर सकता था!"





“मैं तो पहले उड़ भी सकता था!”
“अच्छा, तो अब उड़कर दिखाओ!”
“अब नहीं उड़ सकता, उड़ना भूल गया हूं।”

"एक बार क्या हुआ, मैं समुद्र में नहा रहा था," मिशूत्का कहता है, "मुझ पर ग्राह ने हमला कर दिया। मैं उसे घूंसे पर घूंसा मारने लगा, और ग्राह ने मेरे सिर पर झपट्टा मारा और मेरा सिर ही काट कर ले गया।"

"झूठ!"

"नहीं, सच!"

"तू फिर मर क्यों नहीं गया?"

"मरता क्यों? मैं तैरकर किनारे पर आ गया और सीधा घर चला गया।"

"सिर के बिना?"

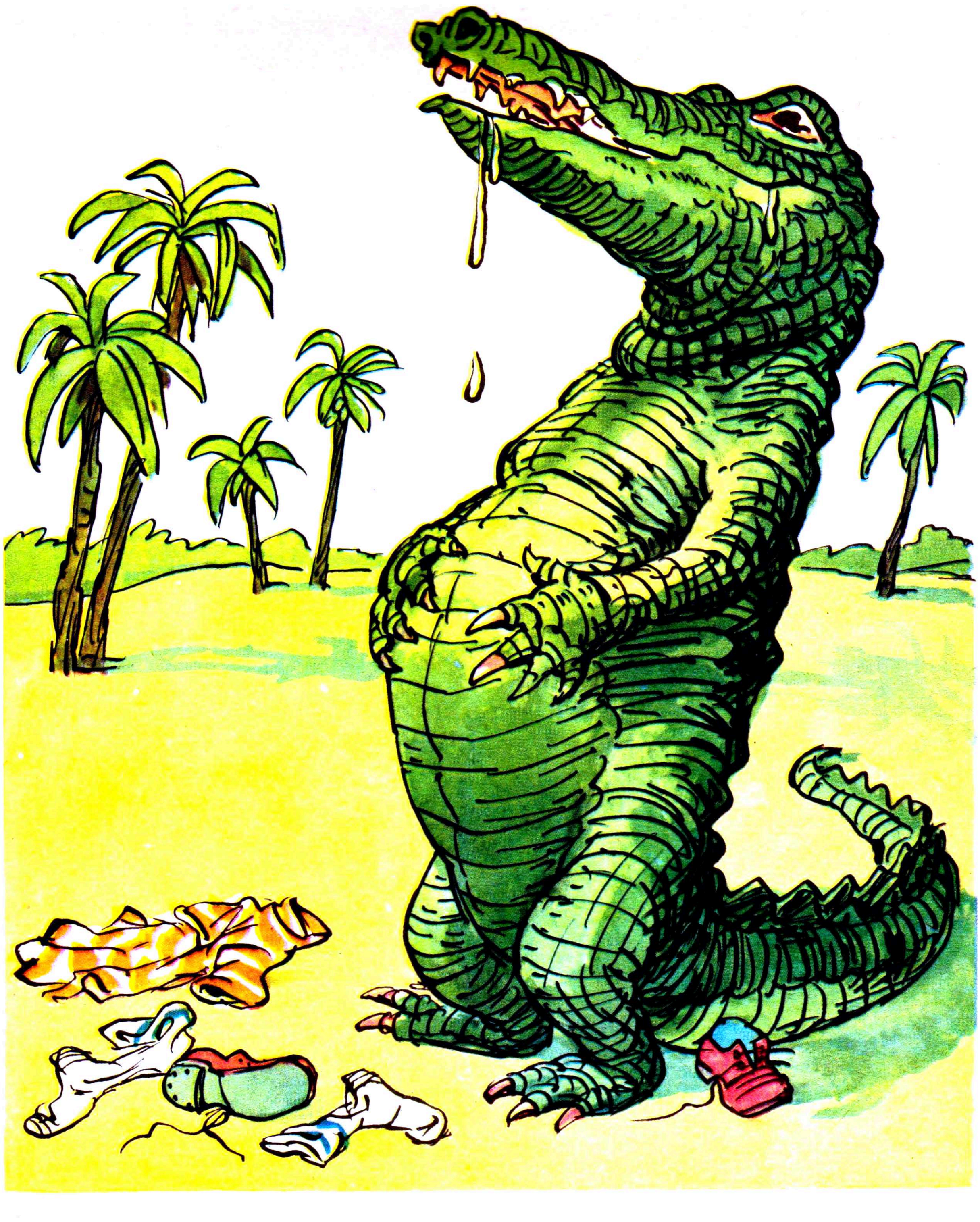
"हां, सिर के बिना। मुझे सिर की क्यों ज़रूरत होगी?"

"सिर के बिना तू चल कैसे पाया?"

"जैसे चलते हैं। तुम समझते हो सिर के बिना चला नहीं जा सकता?"

"अब तेरा सिर कहां से आ गया?"





"नया उग आया है।"

"ख़ूब चलायी!" स्तासिक के मन में डाह उठी। वह मिशूत्का से भी बड़ा भूठ बोलकर दिखाना चाहता था।

"यह तो कुछ भी नहीं," वह बोला, "एक बार मैं अफ़्रीका में था, वहां मुझे मगरमच्छ खा गया।"

"बिलकुल झूठ!" मिशूत्का ने हंसकर कहा।

"बिलकुल सच!"

"तो अब तुम जिन्दा कैसे हो?"

"क्योंकि उसने फिर मुझे उगल दिया।"

मिशूत्का सोच में पड़ गया। वह स्तासिक को झूठ बोलने में मात देना चाहता था। वह सोचता रहा, सोचता रहा, आखिर कहने लगा.





"एक बार, मैं सड़क पर जा रहा था। चारों तरफ़ मोटरें, लॉरियां, ट्रामें चल रही थीं..."

"में जानता हूं, जानता हूं!" स्तासिक ने चिल्लाकर कहा, "अब तुम कहोगे कि कैसे ट्राम तुम्हारे ऊपर से गुज़र गयी। यह तुम पहले ही सुना चुके हो।"

"बिलकुल नहीं। मै और बात कह रहा हूं।"

"अच्छा आगे कहो, गढ़ो भूठ।"

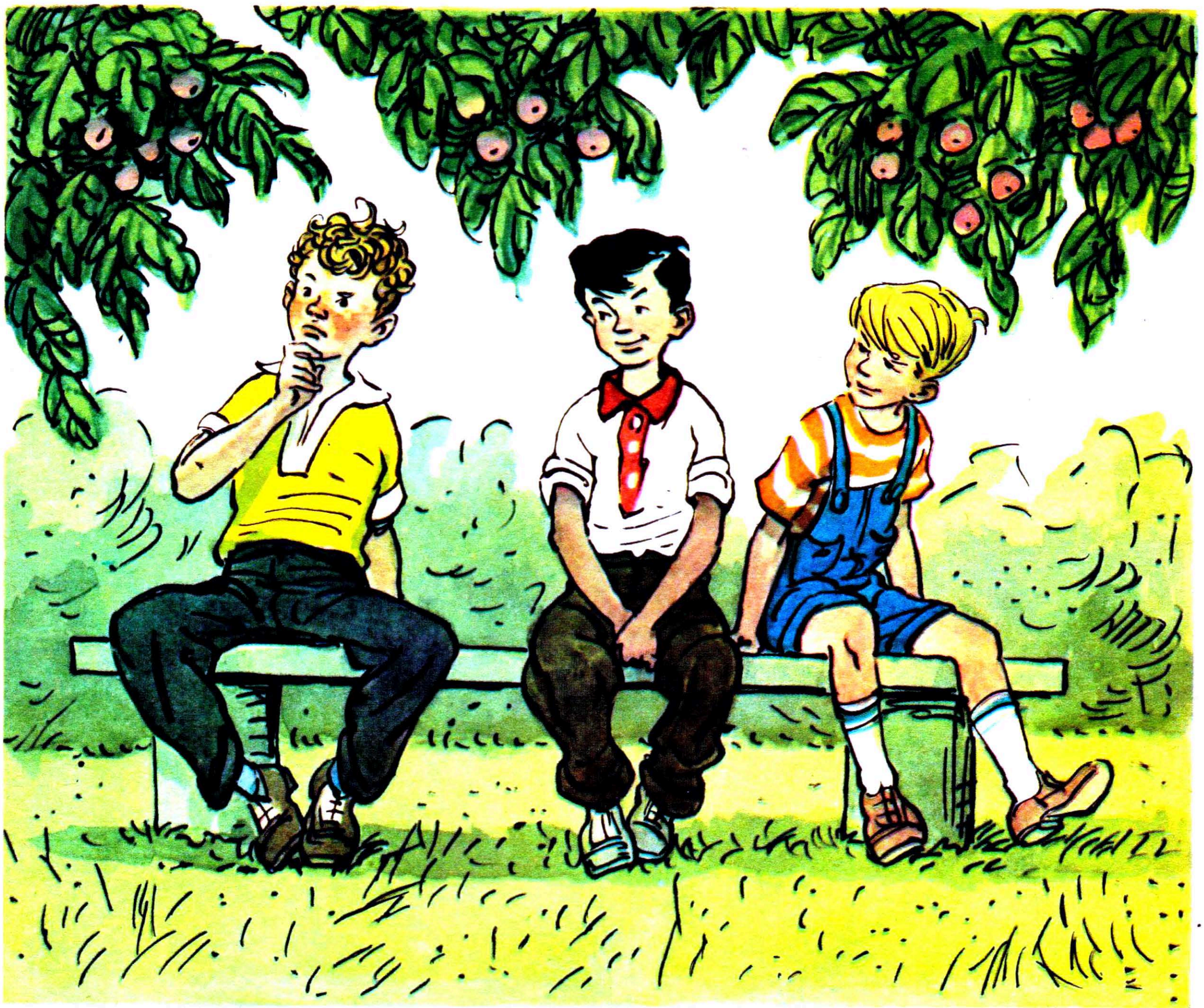
"अच्छा, तो मै चुपचाप अपनी राह जा रहा था। एकदम सामने से बस आ गयी। मैंने उसे देखा ही नहीं था। मैंने भट से उस पैर रख दिया, और ऐसे जोर से दबाया कि वह चपाती की तरह चपटी हो गयी।"

"हा! हा! हा!! सफ़ेद भूठ!"

"बिलकुल नही!"

"तुम बस को कैसे कुचल सकते थे?"

"क्योंकि वह बहुत छोटी थी, खिलौना थी। एक लड़का उसके साथ रस्सी बांधे उसे खींचे लिये जा रहा था।"



इतने में वहां उनका पड़ोसी ईगर आ गया और उन्हीं के साथ बेंच पर बैठ गया। वह बड़ी देर तक मिशूत्का और स्तासिक की गप्पें सुनता रहा, सुनता रहा, फिर बोला:

"भूठ पर भूठ बोल रहे हो! शर्म भी नहीं आती?"

"हम किसी को धोखा थोड़े ही दे रहे हैं," स्तासिक बोला, "हम तो मन से बना बनाकर बोल रहे हैं, जैसे परियों की कहानियां होती हैं।"

"परियों की कहानियां!" ईगर ने कहा और मुंह बनाकर हंसने लगा, "कैसा काम ढूंढ़ा है!"

"तू सोचता है मन से बनाना आसान होता है?"

"और नहीं तो क्या। सब से आसान बात है!"

"बनाके तो दिखा।"

"अभी लो..." ईगर बोला।

मिशूत्का और स्तासिक खुश हो गये और कान लगाकर सुनने लगे।

"अभी लो," ईगर ने दोबारा कहा, "ए-ए-ए... हु... मू... अ-ख... ए-ए-ए..."

"यह क्या हुआ ए-ए ... ऊ-ऊ ... कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

"ठहरो, सोचने तो दो।"

"सोचो, सोचो !"

"ए-ए-ए," ईगर ने फिर कहा और आकाश की ओर देखने लगा, "अभी, अभी ... ए-ए-ए ..."

"अब बनाता क्यों नहीं मन से ? कहता था, बहुत आसान होता है !"

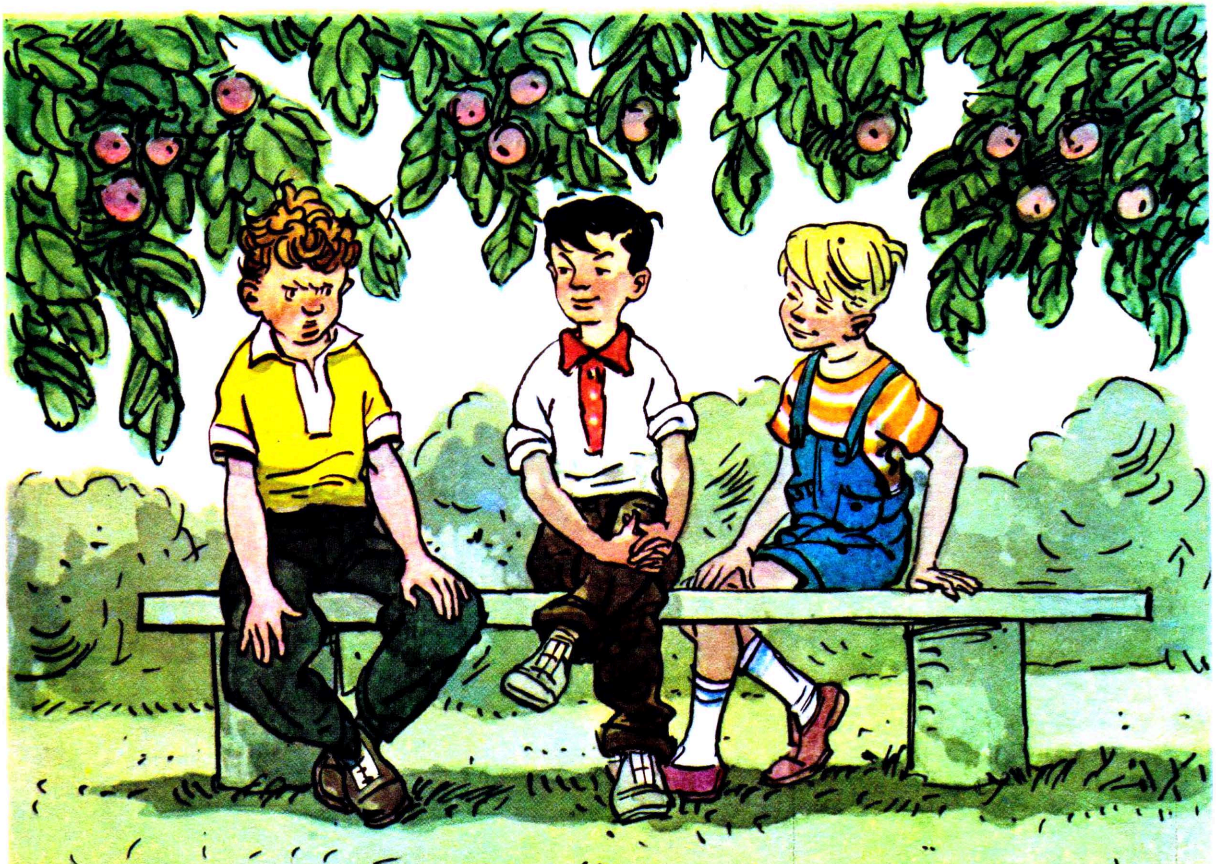
"अभी लो ... अभी ! एक बार मैंने एक कुत्ते को छेड़ा, और उसने झपटकर मेरी टांग पर काट लिया। अभी तक निशान है।"

"इस में तू ने मन से क्या बनाया रे ?" स्तासिक ने पूछा।

"कुछ भी नहीं। जैसे हुआ था, वैसे बता दिया।"

"वाह जी, और कहता था, मैं कहानियां गढ़ने में उस्ताद हूं !"

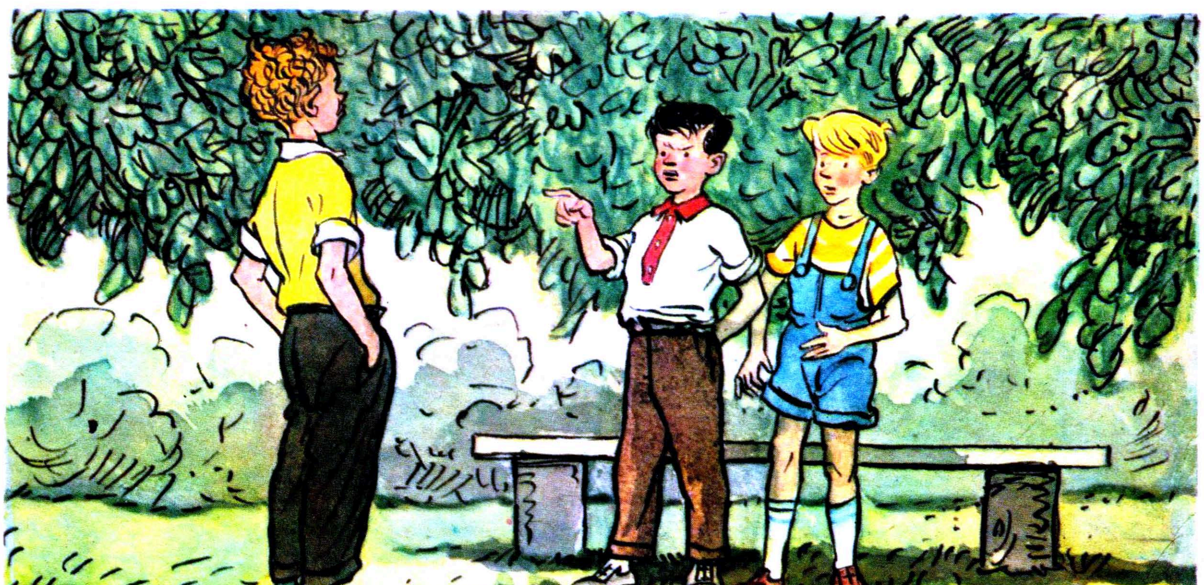
"हां, उस्ताद हूं, लेकिन तुम जैसा नहीं। तुम तो निरे झूठ बोलते हो, इससे क्या फ़ायदा। मैंने कल एक झूठ बोला था, और उससे मुझे फ़ायदा भी हुआ।"





"फ़ायदा कैसा ?"

"सुनो। कल शाम को पिता जी और माता जी घर से बाहर चले गये। मैं और ईरा घर में रह गये। ईरा तो सो गयी और मैं चुपके से रसोईघर में चला गया। वहां मैंने मुरब्बे का डिब्बा खोला और आधा डिब्बा चटकर गया। तब मैंने सोचा, अब क्या करूं, अब तो मैं पकड़ा जाऊंगा। मैंने चुपचाप थोड़ा सा मुरब्बा लाकर ईरा के होंठो पर लगा दिया। माता जी आयीं, 'मुरब्बा किस ने खाया है?' उन्होंने पूछा। 'ईरा ने,' मैंने कहा। माता जी ने देखा, ईरा के होंठ मुरब्बे से सने हुए थे। आज सुबह ईरा को तो ख़ूब डांट पड़ी, और मुझे माता जी ने और मुरब्बा दिया। यह फ़ायदा हुआ।"



"इसका मतलब है तेरे कारण दूसरे को डांट पड़ी, और तू ख़ुश है!" मिशूत्का बोला।

"इससे तुझे क्या?"

"मुझे कुछ नहीं, तू तो... क्या कहते हैं, तू... तू बड़ा मक्कार है!"

"तुम ख़ुद मक्कार हो!"

"चले जाओ यहा से। हम तुम्हारे साथ बेंच पर भी बैठना नही चाहते।"

"मैं भी तुम्हारे साथ नहीं बैठूंगा।"

ईगर उठकर चला गया। मिशूत्का और स्तासिक भी घर चले गये। रास्ते में आइस-क्रीम की दूकान पड़ती थी। दोनो खड़े हो गये। दोनो जेब मे हाथ डाल डालकर देखने लगे कि उन के पास कितने पैसे हैं।

दोनों के पास कुल मिलाकर इतने पैसे निकले कि केवल एक ही आइस-क्रीम ख़रीदी जा सकती थी।

"एक आइस-क्रीम ख़रीद लेते हैं, आधी आधी बांट लेंगे," स्तासिक ने सुझाव दिया।

दूकानवाली ने उन्हें डण्डी पर लगी एक आइस-क्रीम दे दी।

"चलो, घर चलते हैं," मिशूत्का ने कहा, "वहां छुरी से काट लेंगे, ताकि ठीक आधी आधी हिस्से में आये।"

"चलो।"

सीढ़ियों पर उन्हें ईरा मिल गयी। उसकी आंखों से लगता था कि वह रोती रही है।

"तू रो क्यों रही है?" मिशूत्का ने पूछा।

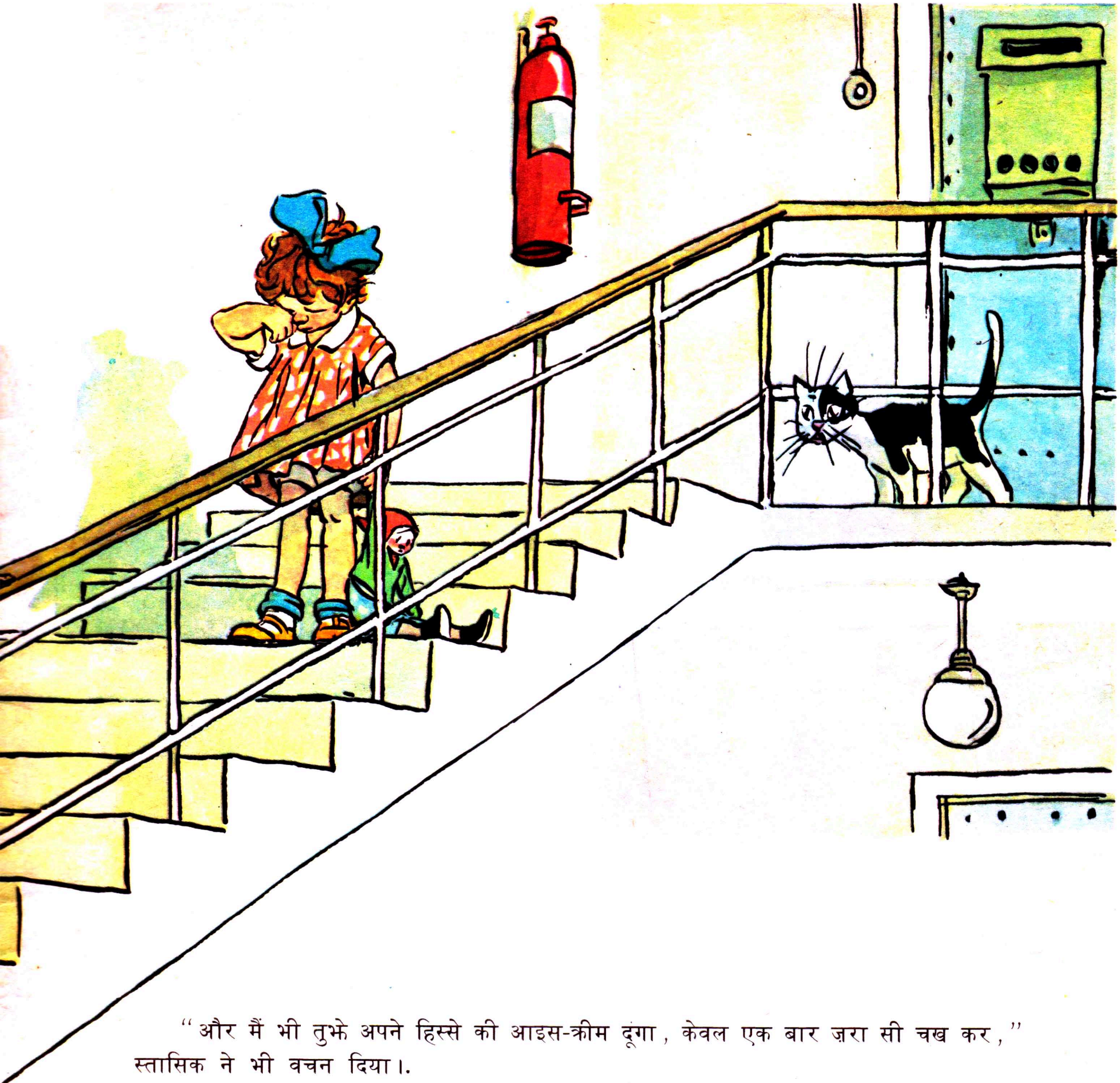
"मां ने मुझे खेलने नहीं जाने दिया।"

"क्यों?"

"मुरब्बा था न, मैंने उसे नहीं खाया था, मगर ईगर ने मेरा नाम लगा दिया। उस ने खाया शायद खुद था और दोष मुझ पर लगा दिया।"

"हां, उसी ने खाया था। वह खुद डींग मार रहा था। तू मत रो। चलो अन्दर चलें। मैं अपने हिस्से की आइस-क्रीम तुझे दे दूंगा," मिशूत्का ने कहा।





"और मैं भी तुझे अपने हिस्से की आइस-क्रीम दूंगा, केवल एक बार ज़रा सी चख कर," स्तासिक ने भी वचन दिया।.

"तुम ख़ुद नहीं खाना चाहते?"

"नहीं। हम ने आज दस दस आइस-क्रीमें खायी हैं," स्तासिक ने कहा।

"चलो, इस आइस-क्रीम के तीन हिस्से करेंगे, यह सब से अच्छा रहेगा," ईरा ने सुझाव दिया।

"ठीक है!" स्तासिक बोला, "अगर सारी की सारी आइस-क्रीम तू ने खा ली, तो तेरे गले में दर्द होने लगेगा।"

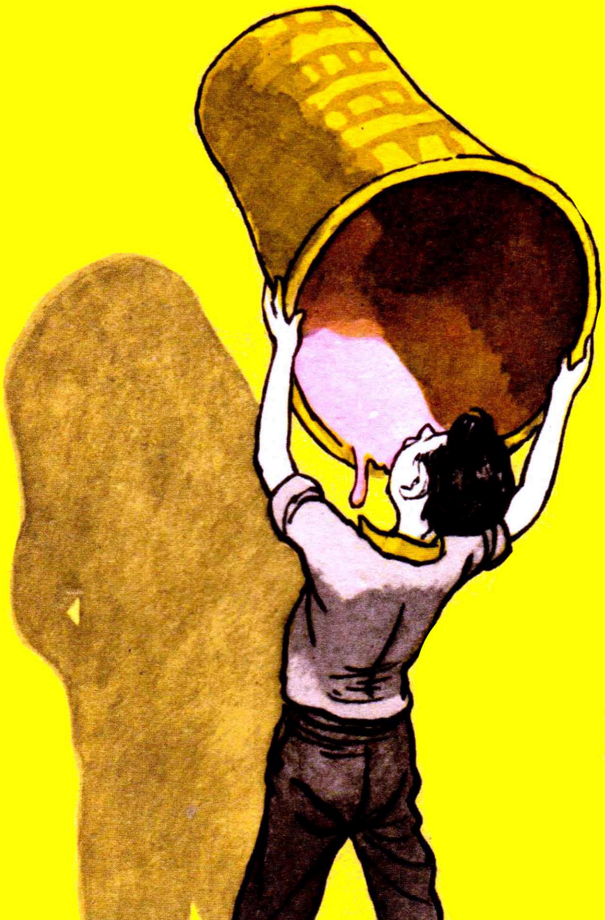


वे घर के अन्दर गये और आइस-क्रीम को तीन हिस्सों में बांट दिया।

"अहा, ख़ूब मज़ेदार है," मिशूत्का बोला, "मुझे आइस-क्रीम बहुत अच्छी लगती है। एक बार मैं पूरी की पूरी बाल्टी आइस-क्रीम की खा गया था।"

"उंह, गप्प लड़ा रहा है!" ईरा ने हंसकर कहा, "कौन मानेगा कि तू पूरी बाल्टी आइस-क्रीम की खा गया?"

"सच, मगर वह बहुत छोटी सी थी, काग़ज़ की बनी थी, बिलकुल उतनी ही जितना छोटा गिलास होता है..."



अनुवादक – भीष्म साहनी
चित्रकार – ई० सेम्योनोव

प्रगति प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

Н. Носов
ФАНТАЗЁРЫ

На языке хинди

N. Nosov.
Story-tellers
in Hindi

Н $\frac{70802-313}{014(01)-82}$ 781-82

4803010101